निम्न पत्रक बॉयो रे में उपलब्ध है:

1. बीजामृत (बीज उपचार)
2. सी.पी.पी. + गौमुत्र (बीज उपचार)
3. निम्बोली का अर्क
4. जि. ओ. सी.
5. टॉप टेन
6. नीम तेल और हिंग
7. गौमुत्र
8. छाछ
9. कपास की प्राथमिक अवस्था में रक्षा
10. जीवामृत
11. स्प्रे केसै करें

The leaflets are available in English and Hindi

उपरोक्त पत्रक हिन्दी और इंग्लिश मे उपलब्ध है।

इस पत्रक मे दि गई जानकारी बॉयो रे के अधिकारीयो के ज्ञान व बॉयो रे किसानों के अनुभव के आधार पर दि गई है। इसमें कुछ विधीयॉ जो दुसरे राज्यों के जैविक किसानों द्वारा अपनाई गई है उन्हे सम्मिलित किया है तथा कुछ विधीयों को पीटर प्राक्टर द्वारा प्रस्तावित बॉयोडायनामिक पद्वति से लिया गया है (जैसे सी.पी.पी.)।

bioRe® Research Station
5th km Milestone, Mandleshwar road
Kasrawad, Distr. Khargone
MP-451228 India
Tel.: +919926838549
Email: biore.lokendra@gmail.com

तारीख: फ़रवरी 2014

लेखक: लोकेन्द्र सिंह मण्डलोई
क्लाउडीया उट्स्
जुलियाना ज्वाईफैल्
राजीव वर्मा

सलाह पत्रक

जैविक कीट नियंत्रण के लिए स्वयं निर्मित दवाईयों को बनाना और उनका उपयोग करना।

गौमुत्र

उपयोग: सशी प्रकार के रसचुसक कीटों को नियंत्रीत करने के लिये।

सामग्री

गौमुत्र
250 – 500 मि. ली.

साधन

* 100 मि. ली. का नाप

असर प्रणाली

गौमुत्र के अंदर हर्मोनस होने से यह रसचुसक किटों को भगाता है। और गौमुत्र अम्लीय होने से खरपतवारो के अंकुरण को रोकता है।

मात्रा: इसकी मात्रा पौधे कि उम्र के अनुसार उपयोग कि जाती है।
अंकुरण से पुडी बनने तक: 250–300 एम.एल प्रति पम्प (15 लिटर)
पुडी बनने से खिलने तक: 300–450 एम.एल प्रति पम्प
खिलने से चुनाई तक: 500 एम.एल प्रति पम्प

रखने की अवधि: हमेशा ताजे गौमुत्र का उपयोग करे।

सीमाए: अब कोई सिमाऐं नहीं।

सकिय तत्व: विशीन्न प्रकार के हार्मोन्स और अम्ल।

बनाने कि विधि

चरण 1: गौमुत्र गाय से सिधे एकत्रीत करे।

चरण 2:

गौमुत्र कि सही मात्रा को नाप कर पम्प मे डाले।